ISSN: 0976-2671

वर्ष– 13 अंक – 3–4 जुलाई–दिसम्बर : 2023

अनुचिन्तन विमर्श

A Multidisciplinary peer Reviewed (Refereed) Journal

अनुचिन्तन फाउण्डेशन एवं अंग विकास परिषद् की त्रैमासिक पत्रिका
(रजि0 नं0– 1831/2009–10 एवं 910/93–94, सोसाइटी रजिस्ट्रेशन एक्स 21,1860)
www.anuchintanfoundation.webs.com

विषय सूची

अनुचिन्तन विमर्श,
वर्ष–13, अंक–3–4, जुलाई–दिसंबर 2023 ISSN: 0976-2671

1. सामाजिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक विकास में सार्वजनिक ग्रंथालय की भूमिका : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
6/ *सुमन कुमारी **शेष मिश्रा

2. पर्यावरण और जीवन दर्शन : एक अनुशीलन
17/ ईश्वर चन्द

3. पर्यावरण एवं जल–जीवन–हरियाली अभियान : बिहार के संदर्भ में एक अध्ययन
25/ गीतांजली भारती

4. भारतीय संस्कृति : देवघर की एक सांस्कृतिक झलक
34/ अपर्णा झा

5. मानव – स्वधर्म : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
40/ मिथिलेश कुमार

6. पर्यावरण संरक्षण एवं सतत् विकास : एक अर्थशास्त्रीय विवेचन
44/ राजीव रंजन

7. खगड़िया की लोक संस्कृति और भाषा (ठेठ हिन्दी)
48/ रोशन रवि

8. बाबा बैद्यनाथ धाम मंदिरः एक सांस्कृतिक विश्लेषण
56/ परिणीता कुमारी

9. संताल परगना में वाणिज्य एवं व्यापार के संभावनाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन
62/ आशीष कुमार केशरी

10. सरकारी स्वास्थ्य संबंधी संरचनाएँ एवं कार्यक्रमों का विश्लेषणात्मक अध्ययन
69/ चन्दन कुमार चौधरी

ISSN- 0976-2671
अनुचिंतन विमर्श, वर्ष–13, अंक–03 – 04, जुलाई – दिसंबर 2023

बाबा बैद्यनाथ धाम मंदिरः एक सांस्कृतिक विश्लेषण

परिणीता कुमारी
शोधार्थी, इतिहास विभाग, पी. के. विश्वविद्यालय, शिवपुरी
Email:parinitasinha4287@gmail.com

सारांश

संस्कृति के निर्माण और संरक्षण में मंदिरों की महत्ती भूमिका रही है। यदि हम भारत की बात करें तो भारतीय समाज में सांस्कृतिक मूल्यों के निर्माण में मंदिरों की भूमिका मानव शरीर एवं सांस के जैसा रही है। भारतीय मंदिरों में संगीत कला, नृत्य कला, आर्युवेद, युद्ध कला, वास्तु कला, शिल्प कला एवं मुर्ति कला आदि का संरक्षण एवं विकास होते रहा है। प्राचीन काल मे तो मंदिरों में ऋषि – महात्मा गुरूकुल आश्रम चलाते थे जहां पुजा–पाठ, मंत्र साधना एवं उपासना के साथ – साथ भारतीय ज्ञान परंपरा एवं संस्कृति का भी पोषण एवं संरक्षण होता था। उन्हीं मंदिरों में बाबा बैद्यनाथधाम का भी एक मंदिर है जिसका भारतीय संस्कृति के विकास एवं पोषण में अहम भूमिका रही है।

शब्द कुंजी : भारतीय संस्कृति, भारतीय ज्ञान परंपरा, रीति–रिवाज, धर्म दर्शन, मानव मूल्य

परिचयः भारतीय संस्कृति केवल परंपरा, रीति–रिवाज, आचार–व्यवहार, रहन–सहन, उत्सव–धर्म मात्र नहीं है बल्कि मानवीय मूल्यों, मानवता और भारतीयता का पर्याय भी है। संस्कृति किसी भी राष्ट्र की जाति अथवा राष्ट्र के शिष्ट समुदाय में विचार, वाणी, आचार–व्यवहार और क्रिया का व्याप्त रूप है। यह सृजनात्मक आचरणगत पहचान है। बुद्धि और सौंदर्य संस्कृति के मुख्य तत्व हैं किंतु मानवता इसकी आत्मा है। संस्कृति का संबंध धर्म–दर्शन से लेकर रीति–रिवाजों, रहन – सहन, आचार – विचार, ज्ञान–विज्ञान, जीवन–पद्धति, कला – मूल्य तथा मानवता से है। संस्कृति मानव – प्रेम, सेवा–समर्पण, त्याग एवं बलिदान का पूँजीभूत रूप भी है। क्रोबर के मत में संस्कृति एक व्यवस्था है जिसमें हम जीवन के अनेक प्रतिमानों, व्यवहार के तरीकों, भौतिक – अभौतिक प्रतीकों, परंपराओं, विचारों, सामाजिक मूल्यों, मानवीय क्रियाओं तथा आविश्कारों को सम्मिलित करते हैं – कल्चरः ए कल्चरल रिव्यू ऑफ कांसेप्टस एंड डिफिनेशनस, (पेज 133)। संस्कृति एक जटिल संपूर्णता है जिसमें उन सभी विशेषताओं का समावेश होता है जिन पर हम विचार करते हैं, कार्य करते हैं और समाज के सदस्य होने के नाते उन्हें अपने

पास रखते हैं एवं आचरण में प्रदर्शित भी करते हैं। कहने का अर्थ यह है कि मनुष्य एक ऐसे सामाजिक प्राणी के रूप में विचार विकसित करते हैं, व्यवहार के लिए नियम बनाते हैं, आविष्कार करते हैं व्यवहार में लाते हैं जो स्वंय के लिए होते हैं, समवेत रूप में संस्कृति कहलाता है।

देवघर बैद्यनाथधाम के नाम से प्रसिद्ध ऐतिहासिक शहर है। यह झारखंड की सांस्कृतिक राजधानी कहलाता है। यहाँ के लोग अनेक संस्कृति, भाषा एवं धर्म के हैं। यह शहर प्राचीन समय से पवित्र तीर्थ स्थल माना जाता है। इस शहर में बिहार, बंगाल एवं अन्य क्षेत्र के लोग निवास करते हैं। यहाँ गुजराती, पंजाबी मारबारी एवं राजस्थानी लोग भी लंबे समय से रहते आए हैं। शहर के स्थानीय लोग अंगिका एवं संथाली भी बोलते हैं। ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले अधिकांश लोग खोरठा बोलते हैं। खोरठा, अंगिका, संथाली इत्यादि को झारखंड सरकार द्वारा प्रतियोगी परीक्षा में भी शामिल कर लिया गया हैं। जनगणना रिपोर्ट 2011 के अनुसार देवघर जिला की भाषा को निम्न तालिका से स्पष्ट किया जा सकता है।

तालिका संख्या 2.17

देवघर जिला में बोली जाने वाली भाषा

भाषा	बोलने वाले लोगों की संख्या (प्रतिशत में)
खोरठा	65.39
हिन्दी	13.92
संथाली	9.83
उर्दू	6.71
बंगाली	2.19
अन्य	1.96

स्रोतः जनगणना रिपोर्ट 2011

उपर्युक्त तालिका संख्या 2.17 से स्पष्ट है कि देवघर जिला के मुख्य भाषा खोरठा है जबकि यहाँ बंगाली इत्यादि भी बोली जाती है।

पर्व एवं त्योहार

पर्व त्योहार हमारी संस्कृति का एक अहम हिस्सा है। देवघर जिला में लंबे समय से विभिन्न धर्म, संप्रदाय एवं पंथ के लोग रहते आ रहे हैं। ये लोग अपने– अपने तरीके से पर्व त्योहार मनाते हैं। बड़े पैमाने पर यहाँ के हिन्दू लोग दीपावली, होली, छठ, दशहरा, रामनवमी, कर्मा आदि त्योहार मनाते हैं। संथाली जो सरणा मानते हैं, ये लोग परंपरागत तरीके से कर्मा, सरहुल, सोहराय आदि पर्व धूम–धाम से मनाते हैं। जिले में सरस्वती पूजा,

मकर संक्रांति, जितिया, नवान्न आदि पर्व धूम–धाम से मनाए जाते हैं। जो लोग मशीन, इंजीनियरिंग आदि से जुड़े हुए रहते हैं वे विश्वकर्मा पूजा को मनाते है। मुस्लिम लोग ईद, बकरीद, सबे बरात, मुहर्रम आदि पर्व मनाते हैं। रामनवमी और तजिया दोनों यहाँ शांतिपूर्वक मनाए जाते हैं।

इस शहर का पवित्र आकर्षण स्थल हैः–

1.बैद्यनाथ धामः बाबा बैद्यनाथ मंदिर परिसर में 12 अन्य मंदिरों के साथ साथ एक ज्योतिर्लिंग है। भारत में झारखंड राज्य के संताल परगना डिवीजन में देवघर में स्थित, इस बड़े मंदिर परिसर में बाबा बैद्यनाथ का मुख्य मंदिर है, जहां 12 अन्य मंदिरों के साथ ज्योतिर्लिंग स्थापित उद्धरण वांछित, मंदिर का उल्लेख कई प्राचीन शास्त्रों में किया गया है तथा आधुनिक इतिहास की किताबों में भी इसका उल्लेख मिलता है। इस ज्योतिर्लिंग की उत्पत्ति की कहानी भगवान राम के युग में त्रेता युग की है। लोकप्रिय हिंदू मान्यताओं के अनुसार, लंका के राजा रावण घायल हो गए थे और उन्होंने शिव की पूजा की थी जहां वर्तमान में मंदिर अवस्थित है। रावण ने भगवान शिव को बलि के रूप में एक के बाद एक अपने दस सिर चढ़ाए। इस .त्य से प्रसन्न होकर भगवान शिव रावण को ठीक करने के लिए पृथ्वी पर अवतरित हुए। चूंकि शिव ने एक चिकित्सक के रूप में काम किया था, इसलिए उन्हें वैद्य कहा जाता है, और भगवान शिव के इस कार्य से ही मंदिर का नाम पड़ा है।

2. तपोवन गुफाएँ और पहाड़ियाँः गुफाओं एवं पहाड़ियों की यह श्रृंखला देवघर से 10 किमी दूर स्थित है तथा इसमें तपोनाथ महादेव नामक शिव का एक मंदिर है । गुफाओं में एक शिव लिंग स्थापित है, जिसके बारे में कहा जाता है कि ऋषि वाल्मीकि यहां तपस्या के लिए आए थे।

3. नौलखा मंदिरः यह 146 फीट ऊंचे मुख्य मंदिर से 1.5 किमी की दूरी पर स्थित एक खास मंदिर है। यह बेलूर में राम.ष्ण के मंदिर के समान है एवं यह राधा–.ष्ण को समर्पित है। इसके निर्माण लागत 9 लाख रुपये होने के कारण इसे नौलखा मंदिर के नाम से जाना जाता है।

4. सत्संग नगर – सत्संग नगर बैद्यनाथ धाम शहर का एक हिस्सा है, जिसमें सत्संग ठाकुरबाड़ी, देवघर शामिल है। यह वह पवित्र स्थल है जहाँ श्री श्री ठाकुर अनुकुलचंद्र जी महाराज ने अपना जीवन व्यतीत किया था। यहाँ के ठाकुर परिवार से मिलने के लिए कई भक्त हर रोज आते हैं । यह सत्संग क्रांति का केंद्र और इस आंदोलन का मुख्य केंद्र भी है। आश्रम में कई भक्त स्थायी रूप से मूल निवासी के रूप में रहते हैं।

5. सावन मेलाः श्रावण मास में बाबाधाम का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। इस दौरान बाबा बैद्यनाथ मंदिर में भक्तों की भीड़ उमड़ती है। ज्यादातर पर्यटक सबसे पहले सुल्तानगंज जाते हैं, जो बाबाधाम से 109 किमी दूर है। सुल्तानगंज में गंगा उत्तर की

तरफ बहती है। भक्त अपने कांवड़ में नदी से जल भरते हैं तथा रास्ते में बोल बम का नारा लगाते हुए बाबाधाम में बाबा बैद्यनाथ मंदिर तक 109 किमी पैदल चलकर जाते हैं। बाबाधाम पहुंचने पर, कांवड़ियां सर्व प्रथम शिवगंगा में डुबकी लगाकर खुद को शुद्ध करते हैं और फिर बाबा बैद्यनाथ मंदिर में प्रवेश करते हैं, जहां ज्योतिर्लिंग को गंगा जल चढ़ाया जाता है। यह तीर्थयात्रा पूरे श्रावण के दौरान जुलाई–अगस्त से 30 दिनों तक चलती रहती है। यह दुनिया का सर्वाधिक लंबा धार्मिक मेला है। सुल्तानगंज से बाबाधाम के बीच पुरे रास्ते भगवाधारी तीर्थयात्रियों की 109 किमी लंबी मानव श्रृंखला सा बना रहता है। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि श्रावण के दौरान लगभग 5.0 से 5.5 मिलियन तीर्थयात्री बाबाधाम आते हैं। श्रावण के महान तीर्थ के अलावा, लगभग पूरे वर्ष मार्च में शिवरात्रि, जनवरी में बसंत पंचमी, सितंबर में भाद्र पूर्णिमा के साथ अच्छी खासी भीड़ रहती है। इसके अलावा, यहां के रिखिया आश्रम अपने ध्यान शिविर के लिए प्रसिद्ध है। संत बालानंद ब्रह्मचारी के रामनिवास आश्रम, मोहनंद स्वामी के मोहन मंदिर, स्वामी हंसदेव अवधूत के कैलाश पहाड़ आश्रम आदि प्रसिद्ध है।

6. बैजू मंदिरः बाबा बैद्यनाथ मंदिर परिसर के पश्चिम तथा देवघर शहर के मुख्य बाजार में एक और मंदिर भी हैं, जिन्हें बैजू मंदिर के नाम से जाना जाता है। इसके अतिरिक्त कई मंदिरों का निर्माण बाबा बैद्यनाथ मंदिर के मुख्य पुजारी के वंशजों ने करवाया था और प्रत्येक मंदिर में भगवान शिव का लिंग स्थापित है।

7. त्रिकुट पर्वतः देवघर से लगभग 16 किमी. दूर दुमका रोड पर एक खूबसूरत पर्वत त्रिकूट स्थित है। इस पहाड़ पर बहुत सारी गुफाएं एवं झरनें है। बैद्यनाथ धाम से बासुकीनाथ मंदिर की ओर जाने वाले श्रद्धालु मंदिरों से सजे इस पर्वत पर रुकना बहुत पसंद करते हैं।

8. नंदन पहाड़ः नंदन पर्वत की महत्ता यहां बने मंदिरों के झुंड के कारण है, जो विभिन्न भगवानों को समर्पित हैं। पहाड़ की चोटी पर एक सुंदर कुंड भी है जहां लोग पिकनिक मनाने आते रहते हैं।

9. आनंद भैरव मंदिर : यह मंदिर बाबा बैद्यनाथ मंदिर के प्रांगण में अवस्थित है। इस मंदिर का निर्माण 1782 में रामदत्त ओझा ने शुरू किया जिसे 1810 एवं 1823 के मध्य आनंददत्त ओझा एवं सर्वानंद ओझा ने पुरा किया। यह मंदिर मुख्य मंदिर के पश्चिम एवं उत्तर कोने में स्थिति है। आनंद भैरव मंदिर की बनावट बांकी अन्य मंदिरों से अलग है। इस मंदिर के मुख्य शिखर की लंबाई लगभग 40 फीट और चौराई 30 फीट है। आनंद भैरव के शिखर पर ताम्बे का कलश है और उसपर पंचशूल भी लगा है।

10. माँ तारा मंदिर : यह मंदिर बाबा बैद्यनाथ मंदिर के प्रांगण में अवस्थित है। इसका निर्माण लगभग 1930 ई0 से 1935 ई0 में पुर्व सरदार पंडा स्वर्गीय श्री श्री भवप्रीतानंद ओझा ने कराया। इस मंदिर का निर्माण मंदिर परिसर में सबसे अंतिम निर्माण है। इस

मंदिर की बनावट अन्य मंदिरों से अलग है। यह मुख्य मंदिर के उत्तर की ओर है और बाबा के निकास द्वार के ठीक सामने है।

11. माँ काली मंदिर : माँ काली मंदिर का निर्माण पुर्व सरदार पंडा स्वर्गीय श्री श्री जयनारायण ओझा ने 1712 ई0 में कराया था। यहां मां की तांत्रिक विधि से पुजा की जाती है। इस मंदिर में शिव के साथ शक्ति दोनों एक साथ पुजा का महत्व है। मां काली की प्रतिमा तीन ओर ताम्बा की ग्रील से घिरा हुआ है। जिससे मां की पुजा करने के लिए भक्त बाईं ओर से पुजा करते हुए दाईं ओर से बाहर निकलते है।

12. दुर्गा मंडप : दुर्गा मंडप में वेदी पर मां शक्ति की पुजा की जाती है। इस मंदिर का निर्माण लगभग 129 वर्ष पुर्व सरदार पंडा स्वर्गीय श्री श्री शैलजानंद ओझा ने कराया, इस मंडप की बनावट अन्य मंदिरों से अलग है। यह मुख्य मंदिर के उत्तर की ओर प्रशासनिक भवन के पास स्थित है। इस मंडप की लंबाई लगभग 20 फीट और चौड़ाई 40 फीट है। इस मंडप के शिखर पर बीच में भगवान गणेश की मनोहारी मुर्ति एवं दो शेर की आकृति बनी है। इस मंडप के उपर पंचशूल नहीं लगा है।

इन सबके अतिरिक्त मंदिर प्रांगण में त्रिपुर सुंदरी मंदिर है। जहां तांत्रिक विधि से पुजा की जाती है। इस मंदिर का निर्माण 1877 से 1901 ई0 के बीच पुर्व सरदार पंडा स्वर्गीय श्री श्री शैलजानंद ओझा ने कराया था। मंदिर प्रांगण में ही मां गंगा का मंदिर है। इस मंदिर का निर्माण 19वीं सदी में भवप्रिता नंद ओझा ने कराया था। प्रांगण में हीं राम, सीता, लक्ष्मण मंदिर है। इस मंदिर का निर्माण पूर्ण सरदार पंडा स्वर्गीय श्री श्री रामदत्त ओझा ने 1782 से 1792 के मध्य कराया था। प्रांगण में ही सूर्यनारायण मंदिर है जिसका निर्माण 1782 से 1793 के बीच पूर्व सरदार पंडा स्वर्गीय श्री श्री रामदत्त ओझा ने कराया था। प्रांगण में माता बगलामुखी का मंदिर है जिसका निर्माण 1793 ई0 में पूर्व सरदार पंडा स्वर्गीय श्री श्री रामदत्त ओझा ने करवाया था। इस तरह बाबा बैद्यनाथ मंदिर प्रांगण में बाबा बैद्यथान ज्योर्तिलींग, मां पार्वती सहित विभिन्न देवि देवताओं के कुल 22 मंदिर अवस्थित है। सभी मंदिरों का अपना अपना पौराणिक इतिहास व सांस्कृतिक महत्व है।

निष्कर्ष

इस प्रकार इस शोधप्रत्र में हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि बाबा बैद्यनाथ धाम मंदिर भारत के प्राचीनतम मंदिरों में से एक मंदिर है जो झारखंड के देवघर में अवस्थित है। यह मंदिर भारतीय संस्कृति एवं ज्ञान परंपरा का जीता जागता उदाहरण है। यह आज भी न केवल कड़ोरों लोगों के आस्था का केन्द्र है बल्कि इससे जुड़े हुए अनेकों परंपराएं एवं रीति रिवाज संरक्षित है। वर्तमान समय में हो रहे लोगों में मुल्य ह्रास, तेजी से पनप रहे अपसंस्कृति आदि के अंधे दौड़ में यह मंदिर लोगों में आत्म विश्वास, मुल्य वृद्धि एवं भारतीय संस्कृति के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका में रहेगा।

संदर्भ सूची

1. Agarwal, Urmila. North Indian temple sculpture. New Delhi: Munshiram Manoharlal Publishers, 1995.

2. Kramrisch, Stella. The Hindu temple. Delhi: Motilal Banarsidass, 1996.

3. Nou, Jean-Louis. Hindu temples. London: Tricolour Books. Books from India., 1985.

4. Ramachandran, Nirmala. Hindu heritage. Pannipitiya: Stamford Lake Publication, 2000.

5. Sharma, J. C. Hindu temples in Vietnam. New Delhi: The Offsetters (Publication Division), 1997.

6. पारिजात, शिवसंकर सिंह, लोक आस्था का महाकुंभ, श्रावणी मेला, युनिवर्सिटी प्रकाशन, 2019

7. विल्बपत्र, प्रभात खबर, दैनिक समाचार पत्र का विशेषांक, जुलाई 2023

8. श्री श्री बैद्यनाथ ज्योर्तिलिंग वाङ्मय, संपादक डॉ0 मोहनानंद मिश्र, हिन्दी विद्यापीठ प्रकाशन देवघर, झारखंड